पूर्ण पाठ · निःशुल्क PDF

लक्ष्मी चालीसा

दोहा · चालीसा · समापन दोहा

Vista Hub · vhoriginal.com
साफ टाइप · प्रिंट के लिए तैयार

कैसे पढ़ें

भक्ति पाठ सहायता

शांत स्थान पर बैठें। दीप या धूप वैकल्पिक है। मन एकाग्र कर माँ लक्ष्मी का स्मरण करें।

पहले दोहा, फिर चालीसा की चालीस चौपाई, अंत में समापन दोहा। स्वर स्पष्ट रखें; जल्दबाजी न करें।

शुक्रवार, दीपावली, धनतेरस या पूर्णिमा की सुबह/संध्या घर की रीति से चुनें। एक बार पूरा पाठ पर्याप्त है; परिवार की परंपरा ७ या ११ बार हो तो उसी से चलें।

श्रद्धा शांत रहे — जबरदस्ती का नियम नहीं।

श्रद्धा नोट

यह **भक्ति पाठ सहायता** है — घर की पूजा-पाठ के लिए स्वयं टाइप किया गया पारंपरिक लोक-पाठ।

आधिकारिक मंदिर प्रकाशन नहीं। किसी प्रकाशक की स्कैन या कॉपी नहीं। तिथि/रीति पंचांग व परिवार से बदल सकती है। चिकित्सा, कानूनी सलाह या फल की गारंटी नहीं। Vista Hub · vhoriginal.com

दोहा

मातु लक्ष्मी करुणामयी। मन अभिलाषित फल देई॥

श्रीविष्णुपद कमल से। भक्तन को सुख देई॥

चौपाई

1–8

सिन्धुसुता तुम कमला कहलाती। कमल पुष्प में निवास सुहाती॥

सूर्य चन्द्र तुम्हरे हैं दीपा। सिन्धु सदा करता प्रणाम रीपा॥

तुम गोविन्द की प्रिया प्यारी। जगत जननि सब दुखहारी॥

जो नर तुम्हें सुमिर मन लाई। ताके सब विधि बनै सहाई॥

ध्यान धरत जब नर मन लाई। ताके निकट न यम दुखदाई॥

तुम ही हो सबकी आधारा। तुम ही हरौ सब संकट भारा॥

तुम ही हो जग की जननी। तुम ही पालक सबकी रानी॥

तुम्हरी कृपा से सब सुख पावै। दुख दारिद्र निकट नहिं आवै॥

चौपाई (जारी)

9–16

धन धान्य सुख सम्पत्ति दाता। अस कहत शारदा विख्याता॥

जो नर नारी ध्यान लगावें। ताके सब संकट मिट जावें॥

रोग शोक दारिद्र्य नसावें। सुख सम्पत्ति घर में आवें॥

पुत्र पौत्र यश कीर्ति बढ़ै। मनवांछित फल शीघ्र लहै॥

तुम बिन और न कोउ सहाई। अस कहत वेद पुराण गाई॥

जो सतसंग करे मन लाई। उनके सब विधि बनै सहाई॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। प्रगट देखत अति सुख पावै॥

तुम्हरे द्वार सदा सुख छावै। संकट कटै आनन्द बढ़ावै॥

चौपाई (जारी)

17–24

कमला कमलिनी पद्मावती। हरिप्रिया सुखदात्री माता॥

वैकुंठ लोक में वास तुम्हारा। विष्णु संग सुख अपरंपारा॥

अष्ट लक्ष्मी रूप तुम्हारा। घर घर पूजत नर नारा॥

धन लक्ष्मी धान्य लक्ष्मी माता। गज लक्ष्मी जय जय त्राता॥

सन्तति लक्ष्मी वीर लक्ष्मी। विद्या लक्ष्मी जय जय लक्ष्मी॥

विजय लक्ष्मी सौभाग्य दाई। आठों रूपों में सुखदाई॥

जो यह पाठ करे श्रद्धा लाई। ता घर लक्ष्मी रहैं सहाई॥

कामी क्रोधी लोभी कपटी। तिनके संग न बैठहु घाटी॥

चौपाई (जारी)

25–32

सत्संगति से पाप नसावै। सुमिरन से मन निर्मल आवै॥

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो यह पाठ करे मन धीरा॥

नित्य निमंत जो गावै। ताके निकट दरिद्र न आवै॥

समरथ जानि करो जग पावन। बेद पुराण कहत सब भावन॥

लक्ष्मी महिमा कोई न जाने। नित प्रति पाठ करत मन माने॥

नाम जपत सुख सम्पत्ति आवै। संशय मिटै आनंद बढ़ावै॥

माँ महालक्ष्मी करुणा निधानी। भक्तन के रखवारे रानी॥

जो नर नारी ध्यान लगावें। ताके सब संकट मिट जावें॥

चौपाई (जारी)

33–40

जो यह चालीसा पढ़े पढ़ावै। लक्ष्मी कृपा दृष्टि तापर आवै॥

शुक्रवार दीपावली विशेष। पाठ करे तो मिले अशेष॥

धनतेरस पूर्णिमा मासा। पाठ करे पावै सुख आशा॥

कमल पुष्प जल चढ़ावै। मन की कामना पूर्ण करावै॥

सत्य वचन दृढ़ विश्वास। पाठ करे तो मिले आश॥

भक्तन की रक्षा करो माता। संकट हरि सुख दे त्राता॥

जय जय जय महालक्ष्मी माता। जय विष्णुप्रिया सुखदाता॥

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्धन महा सुख होई॥

दोहा

लक्ष्मी चालीसा जो नर गावै। बसैं वैकुंठ परम पद पावै॥

मातु चरणन चित लाइके। भक्तदास गुन गाइ॥

॥ लक्ष्मी चालीसा समाप्त ॥

यह पाठ स्वयं टाइप किया गया है · भक्ति पाठ सहायता · आधिकारिक मंदिर प्रकाशन नहीं · Vista Hub